Conclusion

उपसंहार

मानव आदिकाल से ही ''प्रेम '' और ''सौन्दर्य'' के प्रति आकर्षित होता रहा है तथा ''काम'' मानव-जीवन की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है अतएव '' श्रृंगार '' का विशेष महत्व है । श्रृंगार - वर्णन प्रत्येक देश और प्रत्येक युग में लोकप्रिय रहा है । परिणाम स्वरूप संसार का कोई भी साहित्य श्रृंगार - वर्णन से अछूता नहीं है ।

राजस्थान की एक विशेष भौगोलिक,ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थिति है जिसके कारण यहां प्राचीनतम भारतीय सांस्कृतिक उपादान अद्यावधि सुरक्षित रह सके है । विस्तृत मरुस्थल और अगम्य पर्वतमालाओं के कारण तथा अनेक शताब्दियों तक निरन्तर विदेशी आक्रान्ताओं से संघर्ष करने वाले वीर - वीरांगनाओं का प्रदेश होने से यहां बाह्य प्रभाव न्यूनतम पड़ा है और पुरातन अवशेष किसी न किसी रूप में सुरक्षित रह सके हैं । इन पुरातन अवशेषों में अनेक श्रृंगारिक उपादान भी है जिनसे यहां का संघर्षमय और कठोर जीवन जीवनी शक्ति प्राप्त करते हुए निरन्तर सरस बना हुआ है । राजस्थान के श्रृंगारिक लोकगीत राजस्थानी लोक-जीवन के अभिन्न अंग बने हुए हैं ।

राजस्थान किसी न किसी रूप में आज भी मध्यकाल में जी रहा है और यही कारण है कि मध्यकाल का सम्पूर्ण वातावरण अपनी विशेषताओं और रंगीनियों सहित यहां वर्तमान है । अवश्य ही यह वातावरण तीव्रता से विलुप्त होता जा रहा है । उदाहरण रूप में सौ वर्ष पूर्व मौखिक परम्परा में लोक-प्रचलित अनेक कथायें और गीत आज हस्तलिखित ग्रन्थों में ही पढ़ने को मिलते हैं । सौ वर्ष पूर्व का अधिकांश मौखिक साहित्य भी अब लुप्त हो चुका है । वर्तमान में प्रयत्न-पूर्वक प्राप्त किया गया साहित्य उसका एक अंश मात्र है । उदाहरणार्थ राजस्थान के

श्रृंगारिक लोकगीतों के एक प्रधान नायक जलाल और इससे संबंधित लोकगीतों को लिया जा सकता है । श्री जगदीश सिंह गेहलोत ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "मारवाड़ के ग्रामगीत" में जलाल के संबंध में यह विवरण दिया है -

"मुगल सम्राट अकबर का पूरा नाम अबुल फतह जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह था । जल्ला, जलाल तथा जलाला इसी जलालुद्दीन शब्द के अपभ्रंश हैं जो अब पति के स्थान में प्रयोग होते हैं । कहते हैं कि अकबर को संकेत कर यह गीत उस समय रचा गया था । इस बादशाह का उस समय के राजपूत राजाओं पर बड़ा भीतरी प्रभाव पड़ा था । फारसी तवारीखों तथा मारवाड़ी ख्यालों से ज्ञात होता है कि सीसोदिया (गहलोत) तथा चौहान दो ही खांपे उसके भीतरी प्रभाव से बची थीं । इन बादशाहों का यह प्रभाव करीब सं० १७७१ (सम्राट फर्रुखसियर) तक नरेशों पर बना रहा ।"[१]

राजस्थानी लोकगीतों की एक अध्येत्री डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल ने भी श्री गेहलोत के ही मत का समर्थन किया है ।[२]

वस्तुत: जलाल बादशाह अकबर न होकर राजस्थान के श्रृंगारिक लोकगीतों का एक प्रधान नायक है । इसके सम्बन्ध में डा०पुरूषोत्तम लाल मेनारिया ने अपने एक निबन्ध में विस्तार से प्रकाश डाला है ।[३] इसी प्रकार राजस्थान के सैकड़ों ही श्रृंगारिक लोकगीतों के नाम एवं शीर्षक मात्र ही प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों में,जैन कवियों की देशियों और ढालों के रूप में मिलते हैं । पूरे गीत अब विलुप्त हो चुके हैं ।

स्वाधीनता से पूर्व राजस्थान अनेक देशी रियासतों में विभाजित था । प्रत्येक रियासत का अधिकांश भूमि-भाग सैकड़ों सामन्तों में बंटा हुआ

---

१. मारवाड़ के ग्रामगीत प्रकाशन-हिन्दी साहित्य मंदिर,जोधपुर पृ० १७८
२. राजस्थानी लोकगीत भाग १, राजस्थान साहित्य एकेदमी- पृ० १६६
३. जलाल और उससे संबंधित राजस्थानी लोकगीत - राजस्थानी लोकगीत, चिन्मय प्रकाशन, जयपुर - पृ० १४६

था । सामन्ती जीवन का प्रभाव भारतीय स्वाधीनता और राजस्थान के एकीकरण के उपरान्त आज भी बना हुआ है । सामन्ती जीवन की विशेषतायें राजस्थान में वर्तमान हैं, जिसके परिणामस्वरूप अनेक श्रृंगारिक गीत भी मूल रूप में उपलब्ध हो जाते हैं ।

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि राजस्थान के श्रृंगारिक लोकगीतों का वर्ण्य-विषय मूलत: यहां का जीवन है । दैनिक जीवन में घटित होने वाली अनेक घटनायें अपनी सम्पूर्ण सरसता के साथ इन गीतों में चित्रित की गई है । वर्षा ऋतु आने पर 'काली कलायण उमड़ने', 'मोटी छांटों के बरसने' नाडा नाडियों और सरोवरों के भरने के साथ ही राजस्थानी जीवन में एक ओर प्रेम लहराने लगता हैं तो दूसरी ओर खेतों में कठोर परिश्रम का समय आ जाता है । ऐसी अवस्था में प्रेमी जन अपने प्रेम का निर्वाह करते हुये भी खेत हांकते, फसल बोते और काटकर घर लाते हैं । राजस्थान के अधिकांश भू-भागों में सिंचाई के साधन कम होने से प्राय: एक ही फसल वर्षा होने पर होती है । यदि यह फसल न हो तो लोगों को भारी कष्ट उठाने होते हैं । राजस्थान के श्रृंगारिक लोकगीतों में पारस्परिक प्रेम और कर्तव्य का एक साथ सफल, चित्रण किया गया है । लोक जीवन के कर्तव्य में प्रेम बाधक और सहायक दोनों रूपों में बताया गया है किन्तु अन्त में विजय कर्तव्य की बताई है ।

राजस्थान के श्रृंगारिक लोकगीतों में पारिवारिक जीवन का सहज और सर्वांगपूर्ण चित्रण हुआ है । पारिवारिक चित्रण में नायिकाओं के लिये मुख्यत: दो पक्ष हैं - पिअर और सुसराल । नायिका के दोनों ही पक्षों के प्रति लगाव और कर्तव्य होते हैं । मध्ययुगीन राजस्थानी चन्द्रमुखी वीरांगना ने सती होकर अपने अंतिम कर्तव्य का निर्वाह किया जिससे उसके पिअर और सुसराल दोनों ही पक्ष प्रकाशित

हो गये है । यह चन्द्रमुखी चन्द्रमा से बढ़कर मानी गई -

चन्द उजाले एक पख, बीजे पख अंधियार ।
बलु दुहु पख उजालिया चन्द मुखि बलिहार ।।

राजस्थानी नायिका के पीअर पक्ष में माता-पिता, भाई-बहिन, ननद-भौजाई, सखी-सहेलियां, जीजा-जीजी, मामा-मामी, नाना-नानी, आदि के प्रति अनूठे प्रेम-भाव व्यक्त किये गये हैं । ससुराल में रहते हुये नायिका को पीअर की याद आती रहती है, पीअर की आस उससे छूटती नहीं, पीअरवालों के प्रति अनूठे संबोधन व्यक्त किये हैं ।

नायिका के ससुराल पक्ष में पति, सास, श्वसुर, ननद, देवर, जेठ, जेठानी, जेठूत, सौत देवर देवरानी, ननद-ननदोई आदि के संबंध में अनेक प्रकार की अनूठी अभिव्यंजनायें की गई हैं । परिवार की सम्पूर्ण सरस चित्रण ''सहेल्यां अे आंबो मोरियो''[१] गीत में किया गया है ।

परिवार संबंधी अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों को भी इन गीतों में चित्रित किया गया है । जैसे राईका, जोशी, सेवक, सेविका, हाली इत्यादि ।

इन गीतों में समाज का भी सर्वांगीण चित्रण मिलता है । कृषाक, मजदूर, ग्वाल बाल, सामन्त, साहूकार, व्यापारी, बणजारा, तेली, दर्जी, मणिहार, ढोली, चमार, माली, पुरोहित आदि संबंधित सभी वर्गों का यथास्थान समावेश किया गया है । राजस्थान

---

१. परिशिष्ट गीत संख्या -१७

के श्रृंगारिक लोकगीतों में जड़ चेतन सम्पूर्ण प्रकृति को सहयोगी रूप में अपनाया गया है । आम, पीपल, नीम, बड़, खेजड़ला, बबूल, फोग, फाड़खो, जालू, इत्यादि वन-वनस्पति का नीम्बू, दाड़िम, दाख, मेंहदी आदि पौधों का समावेश किया गया है ।

सूवटा (तोता), कुरज, कागला (कौआ), परेवड़ा (कबूतर) नायक नायिकाओं के लिये सदेशवाहक हैं । प्रेमी नायक-नायिकायें इनसे वार्तालाप भी कर लेते हैं ।

बादल, बीजली, वायरिया (वायु) और नदी नाले, सजीव पात्रों के रूप में प्रस्तुत किये गये हैं । इनसे कोई अलगाव नहीं, दुराव नहीं । हाथी, ऊंट, घोड़े भी इन श्रृंगारिक लोकगीतों के मुँह-बोलते पात्र हैं । ये भी अन्य पात्रों की बातचीत सुनते और कहते हैं । राजस्थान के श्रृंगारिक लोकगीतों में जीवन संबंधी ये पदार्थ मानवी रूप में मुंह बोलते चित्रित किये गये है जिससे कला की और कलाकार की चरम सफलता ज्ञात होती है । परम सफल कलाकार ही सजीव और यथार्थ कला का सृजन कर सकता हैं ।

राजस्थान के श्रृंगारिक लोकगीतों के नायक नायिकायें सभी वर्गों से संबंधित है । इन गीतों के हिन्दु-मुसलमान सभी पात्र एक ही भारतीय संस्कृति के रंग में रंगे हुये हैं । मुसलमान नायक जलाल राजस्थानी त्यौहार श्रावणी तीज पर अपनी प्रेमिका बूबना से मिलने के लिये बहुत दूर की कष्टप्रद यात्रा से पंहुचना अपना कर्तव्य समझता है । जलाल और बूबना मरने के बाद दफना दिये जाते हैं तो शिव-पार्वती उन्हें पुनर्जीवित करते हैं ।

राजस्थान के श्रृंगारिक लोकगीतों का चमत्कार इनके प्रतीक प्रयोगों में है । इन प्रतीकों के माध्यम से ये गीत परम-श्रृंगारी होते हुये भी परिवार में गेय बन सके हैं । घूमर संबंधी एक गीत में एक बाला नायिका अपनी वय:संधि को कितने चमत्कार और सौन्दर्य के साथ व्यक्त करती है -

घूमर रमवा मैं जास्यां
मने रमतां ने लाडूड़ा लाया अे मां
मने रमतां ने काजळ टीकी लाया अे मां
घूमर रमवा मैं जास्यां ।

राजस्थान के श्रृंगारिक लोकगीतों के अध्ययन और अनुसंधान सम्बन्धी प्रस्तुत विनम्र प्रयास से लोक-साहित्य के क्षेत्र में अनूठे और महत्वपूर्ण ज्ञातव्य प्राप्त हुए हैं । मध्ययुगीन भारतीय संस्कृति के स्वर आज भी राजस्थानी लोक-मानस में गुंजायमान हो रहे हैं । राजस्थान में कहीं कहीं मध्ययुगीन अभाव आज भी मुंह खोले खड़ा है, जिससे विवश हो नायक को अपना क्षेत्र छोड़ कर सुदूर आजीविका हेतु जाना पड़ता है और उसकी नायिका वहीं परंपरागत मध्ययुगीन गीत गाती हुई उसकी प्रतीक्षा में समय व्यतीत करती है । राजस्थान के वही गढ़, कोट, कंगूरे, हवेलियां, महल-माळियें, गोखड़े, हाट-बाजार, वीथिकाएं, घाट, सरोवर मध्ययुगीन प्रेमी नायक-नायिकाओं के स्मारकों के रूप में दिखाई देते हैं और इनसे सम्बन्धित श्रृंगारिक गीत गाने को प्रेरित ही नहीं विवश करते रहते हैं । इन गीतों के माध्यम से राजस्थान का मध्ययुगीन सरस-सौन्दर्यमय वातावरण सजीव हो उठता है । अनूठे विषय-वर्णन, सजीव चरित्र-चित्रण, जादुई वातावरण, मौलिक स्वर-लहरी और नवजीवनदायी प्रभाव से परिपूर्ण राजस्थान के श्रृंगारिक लोक-गीत निश्चित ही साहित्य जगत की श्री-शोभा की अभिवृद्धि करने वाले अनमोल रत्न हैं ।